Title: Regarding: Need to address the problems being faced by victims affected due to natural calamities in Bihar.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): अध्यक्ष महोदया, अपने देश में ज्यादातर लोग गर्मी से तबाह हो रहे हैं। 40 से 45 डिग्री गर्मी से लोग झुलस रहे हैं। नील गायें मर रही हैं, हिरण मर रहे हैं, पानी पीने के लिए नहीं है। इसी दौरान भारी तूफान आया। 125 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चली। बंगाल, बिहार और असम के बार्डर के इलाके तबाह हुए। बिहार के पूर्णिया, अररिया, कटिहार, किशनगंज में करीब सौ से ज्यादा लोग मर गए। हजारों घर बरबाद हो गए। इतनी तबाही हुई कि अररिया जेल की दीवार टूट गई। वहां से कैदियों को निकाल कर दूसरी जेल में ले जाना पड़ा। इसी प्रकार से बंगाल और असम में सैकड़ों लोग मरे हैं और हजारों घर बरबाद हुए हैं।

इसी प्रकार से बिहार में कम से कम पांच सौ गांवों में आग लगी है। 15 से 20 हजार गरीबों के घर जलकर राख हो गए हैं। कई लोग जल कर मारे गए। झुलसने से जानवरों की भी मृत्यु हुई। गरीबों की गाय, भैंस, बकरियां मरी हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि डिजास्टर मैनेजमेंट कहां है? इसी सदन में डिजास्टर मैनेजमेंट आथोरिटी पारित की गई थी। कहां है राज्य सरकार, कहां है भारत सरकार? विपत्ति पर विपत्ति पड़ी, ओ दयानिधि तेरी गति देख न पड़ी। इसका मतलब कोई राहत नहीं है, कोई पुनर्वास नहीं है। नदियों के कटाव से अलग तबाही हो रही है। बूढ़ी गंडक, बागमती, गंडक, गंगा नदी की तबाही से 30 हजार परिवार बरबाद हो गए हैं। कहां पुनर्वास हो रहा है, कहां राहत मिल रही है, कहां है राज्य सरकार? मैं चाहता हूं कि भारत सरकार इसमें दखल दे, केवल राज्य सरकारों पर ही इसे न छोडे। यह प्राकृतिक आपदाएं हैं। सूखा पड़ता है, बाढ़ आती है, तबाही अलग होती है, आगजनी होती है। लोगों के घर जलते हैं, लोग मरते हैं और अगर सरकार सहायता के लिए खड़ी नहीं होगी, तो कौन खड़ा होगा? मेरी दर्खास्त है कि भारत सरकार बताए कि तबाही का आलम क्या है? क्या सहायता दी गई है, इस बारे में राज्य सरकारों से रिपोर्ट मंगाई जाए। इनका डिजास्टर मैनेजमेंट आथोरिटी सफेद हाथी की तरह है। कहीं भी डिजास्टर मैनेजमेंट नहीं है। हजारों लोग जो बेघर हुए हैं, उन्हें कब तक घर मिलेगा? उनके लिए क्या राहत है?

पुनर्वास क्या है? जो मर गए हैं, उनका मुआवजा क्या है? प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए सरकार को खड़े होना चाहिए, नहीं तो तबाही है। इस पर कार्रवाई होनी चाहिए।...(व्यवधान)

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): अध्यक्ष महोदया, इसे दैवी आपदा में नहीं माना जा रहा है। उत्तर प्रदेश में जिन गांवों में इंसीडेंट हो रहे हैं, फसल जल रही है, लेकिन इसे दैवी आपदा मानकर अतिरिक्त सहायता नहीं दी जा रही है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : ठीक है।

श्री कौशलेन्द्र कुमार।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप कृपया बैठ जाइए। आप अपने को इससे एसोसिएट कर लीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): मैं अपने आपको इस मामले के साथ एसोसिएट करता हूं।

अध्यक्ष महोदया : आप क्यों खड़े हो गए हैं। आपको एसोसिएट करना है तो कीजिए नहीं तो बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइए। आप इनको बोलने दीजिए।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : जनता की भलाई के बारे में सोचना चाहिए।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : ठीक है, आप बैठ जाइए। जगदम्बिका पाल जी, आप क्यों खड़े हो रहे हैं?

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : कुछ रिकॉर्ड में नहीं जाएगा।

...(व्यवधान) *

अध्यक्ष महोदया : आप शांत हो जाइए। शून्य प्रहर कितने अच्छे से चल रहा था और आप अचानक इतना उत्तेजित हो गए।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : अध्यक्ष महोदया, उन गरीबों का क्या होगा जो प्राकृतिक आपदा से पीड़ित हैं।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप शांत होकर सुनिए, मंत्री महोदय कुछ कह रहे हैं।

â€¦(व्यवधान)

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PLANNING AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI V. NARAYANASAMY): Madam, the hon. Member, Dr. Raghuvansh Prasad Singh, has raised the issue of natural calamities and the people who had died in Bihar. This issue was raised by the hon. Members of other States also.

As far as the State of Bihar is concerned, I will bring the issue that has been raised by the hon. Member to the notice of the hon. Home Minister, who is in-charge and looking after the calamities. I will request him to look into the matter. ...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया : आपकी बात हो गई, अब उन्होंने बोल दिया है।